Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

सूर-काव्य में निहित वात्सल्य वर्णन

Suman*

M.Phil (Hindi) NET, Hisar

सार – *सूरदास जी वात्सल्यरस के सम्राट माने गए हैं। उन्होंने श्रृंगार और शान्त रसो का भी बड़ा मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। बालकृष्ण की लीलाओं को उन्होंने अन्तःचक्षुओं से इतने सुन्दर, मोहक, यथार्थ एवं व्यापक रुप में देखा था, जितना कोई आँख वाला भी नहीं देख सकता। वात्सल्य का वर्णन करते हुए वे इतने अधिक भाव-विभोर हो उठते हैं कि संसार का कोई आकर्षण फिर उनके लिए शेष नहीं रह जाता।*

----------X----------

सूर सूर तुलसी शशि, उड़गन केशव दास।

अबके कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकाश।।

उक्त पंक्तियों के अनुसार महाकवि सूरदास हिन्दी साहित्याकाश के सूर्य हैं और गोस्वामी तुलसीदास साहित्याकाश के चन्द्रमा हैं, जबकि केशवदास तारों की भांति टिमटिमाते हैं। आधुनिक कवि जुगनू के समान यत्र-तत्र चमकते हैं। वस्तुतः महाकवि सूरदास वात्सल्य भाव के शिरोमणि कवि हैं। उनके वात्सल्य वर्णन को प्रस्तुत करने से पहले 'वात्सल्य' भाव को समझना आवश्यक है। डॉ. जगदीश गुप्त के अनुसार - 'वात्सल्य' शब्द 'वत्स' से व्युत्पन्न और पुत्रादि विषयक रति का पर्याय है। इसका प्रयोग रस की अपेक्षा भाव के लिए अधिक उपयुक्त है। कदाचित, इसलिए प्राचीन आचार्यों ने 'वात्सल्य भाव' न लिखकर 'वत्सल रस' लिखा है और वात्सल्य को उसका स्थायी भाव माना है। वात्सल्य स्नेह इसका स्थायी भाव होता है तथा पुत्रादि आलम्बनन।.... बालसुलभ चेष्टाएँ उद्दीपनहैं। आलिंगन, अंग स्पर्श, शिर का चूमना, देखना, रोमांच, आनंदाश्रु आदि अनुभाव हैं। अनिष्ट की आशंका, हर्ष, गर्व आदि संचारी माने जाते हैं।''1 वस्तुतः सूरदास ने वात्सल्य भाव का विस्तार से वर्णन किया है। उनके काव्य-ग्रन्थ 'सूरसागर' में नंद, यशोदा तथा अन्य वयस्क गोपियों का बालकृष्ण के प्रति प्रेरम, आकर्षण, खीझ, व्यंग्य, उपालग्य आदि सभी वात्सल्य रस की सामग्री है। कृष्ण का सौन्दर्य वर्णन तथा बाल-क्रीड़ाओं का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण आदि 'सूरसागर' में निहित है। 'वात्सल्य' भाव के दो प्रमुख भेद हैं- (1) संयोग वात्सल्य (2) वियोग वात्सल्य। डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित ने वियोग वात्सल्य के चार भेद माने हैं- 1. गच्छत्प्रवास, 2. प्रवास स्थित 3. प्रवासागत 4. करुण।

सूरदास बाल-मनोविज्ञान के प्रबुद्ध पारखी थे। उन्होंने कृष्ण की बाल-लीलाओं की जैसी मनोहर झांकी प्रस्तुत की है, वैसे झांकी विश्व-साहित्य की किसी भी भाषा में मिलनी संभव नहीं है। इसलिए बाल-वर्णन के लिए विश्व में वे अद्‌वितीय कवि सिद्ध हुए। चक्षुविहीन सूर ने बालक कृष्ण की जिन सूक्ष्मातिसूक्ष्म मनोवृत्तियों की प्रस्तुति की है, वह एक कुशल चित्रकार के द्‌वारा भी संभव नहीं है।। आचार्य वैजनाथ राय के मतानुसार- "सूर को माता की सहज स्निग्ध ममता, पिता का संतुलित स्नेहपूर्ण हृदय तथा सखा, भ्राता, गुरु, प्रेयसी एवं शत्रु के हृदय में प्रवेश करने की पैनी दृष्टि प्राप्त थी, तभी तो वात्सल्य के क्षेत्र में वे कोना-कोना झांक आए हैं। सूर का सहज एवं स्वाभाविक वात्सल्य वर्णन इसका प्रमाण है। बालक कृष्ण की लीलाओं का उन्होंने ऐसा कलापूर्ण चित्रण किया है कि उसे पढ़कर सहृदय पाठक झूम उठता है। सूरसागर में लगभग सात सौ पद इसी संदर्भ में रचे गए हैं। बालक कृष्ण के मन की कोई भी ऐसी मूक अन्तर्दशा एवं तोतली भावना नहीं जो सूर के पदों में अधूरी रह गई हो।"2

वात्सल्य के संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत विशेष रूप से उल्लेखनीय है- "जितने विस्तृत और विशद् रूप में बाल्यजीवन का चित्रण इन्होंने किया है उतने विस्तृत रूप में और किसी कवि ने नहीं किया। शैशव से लेकर कौमार्य अवस्था तक के क्रम से लगे हुए न जाने कितने चित्र मौजूद हैं।.... कवि ने बालक कृष्ण की अंतः प्रकृति में पूरा प्रवेश किया है और अनेक वात्सल्य-भावों की सुंदर स्वाभाविक व्यंजना की है।"3 डॉ. हरगुलाल की टिप्प्पणी भी द्रष्टव्य है- "निश्चय ही इस दृष्टि से सूर एक महान् कवि हैं। उनका 'सूरसागर' यशोदा के वात्सल्यपरक हृदय की अप्रतिम झाँकी

www.ignited.in

प्रस्तुत करने के कारण काल के पट पर एक अमिट चिह्न बन गया है।''4

महाकवि सूरदास का वात्सल्य वर्णन भाव-बोध की दृष्टि से हिन्दी-जगत में अपना प्रथम स्थान रखता है। विद्वानों ने वात्सल्य भाव के दो भेद किये हैं- (1) संयोग वात्सल्य (2) वियोग वात्सल्य। कवि ने इन दोनों भावों की मनोरम झाँकी प्रस्तुत की है।

(1) संयोग वात्सल्य:

सूर ने संयोग वात्सल्य की प्रस्तुति कृष्ण-जन्म के बाद की ही की है। उन्होंने नंद और यशोदा के हर्षोल्लास का आकलन करते हुए कृष्ण के जन्मोत्सव का जो स्वाभाविक चित्र उपस्थित किया है, वह अत्यंत मार्मिक एवं सर्वथा लौकिक है। शिशु कृष्ण पालने में सो रहे हैं। माता यशोदा उन्हें पालने में झुला-झुलाकर सुलाते हुए अतुलित मातृ-स्नेह व्यक्त कर रही है-

जसोदा हरि पालने झुलावै।

हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ-सोइ कछु गावै।

मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहै न आनि सुवावै।

तू काहे न बेगहि आवै, तोको कान्ह बुलावै।।''5

श्रीकृष्ण अपने पैर के अंगूठे को मुख में डालकर चूस रहे हैं। ऐसी प्रवृति लगभग सभी शिशुओं में मिलती है। कवि ने इसकी प्रस्तुति इस प्रकार की है-

कर पग गहि, अंगूठा मुख मेलत।

प्रभु पौढ़े पालनै अकेले, हरिव हरषि अपने रंग खेलत।

सूर ने मातृहृदय की भी सुंदर प्रस्तुति की है। यह सत्य है कि पुत्र अपनी माता के हृदय में नाना प्रकार की अभिलाषाओं का केन्द्र होता है। माता यशोदा के हृदय के भावों की प्रस्तुति इस प्रकार की है-

जसुमति मन अभिलाष करै।

कब मेरो लाल घुटरुवनि रेंगे, कब धरनि पग द्वैक धरै।

कब द्वै दाँत दूध के देखौं, कब तोतरे मुख बचन झरै।

कब नंदहि बाबा कहि बोले, कब जननी कवि मोहि ररै।6

माता-पिता के लिए कृष्ण ऐसे मनोरंजक एवं सुखद खिलौने हैं कि दोनों का हृदय उस खिलौने से खेलने के लिए मचल उठता है। कभी-कभी दोनों में होड़-सी लग जाती है-

इतते नंद बुलाइ लैत है, उततैं जननी बुलावे री।

दम्पत्ति होड़ करत आपस मैं, स्याम खिलौना कीन्हो री।।7

सूरदास ने अपने काव्य में लोक और शास्त्र-दोनों का सुंदर समन्वय किया है। जन्म-संस्कार के बाद नामकरण अन्नाप्रांशन, वर्षगांठ, कर्णबेध, उपनयन, विवाह आदि संस्कारों का विशद् वर्णन किया है। माता-पिता को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होती है कि कृष्ण के अन्नाप्राशन का समय हो गया है। माता यशोदा मणि कांचन का थाल सजाती है। नाना प्रकार के व्यंजन तैयार करती है।। ब्रज के गोप-गोपियों एवं बंध-बांधवों को आमंत्रित कर अन्नाप्राशन-उत्सव बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया जाता है। नंदजी कंचन-थाल में खीर, धृत और मधु रखकर कृष्ण का मुंह जूठा कराते हैं। इस अवसर पर ब्रज की औरतें गीत गाकर वात्सल्य भाव की सरिता बहा देती हैं-

ललन हौं या छवि ऊपर वारी।

बाल-गोपाल लगी इन नैननि, रोग-बुलाय तुम्हारी।

लट लटकनि, मोहन मसि-बिंदुका-तिलक भाल सुखकारी।8

कृष्ण कुछ बड़े हुए, घुटने के बल चलने लगे, साधारण बालकों के समान उनका धूलि-धूसरित होना बड़ा मनमोहक लगता है। यथा-

सोभित कर नवनीत लिए।

छुटुरुनि चलत रेनु-तन मंडित, मुख-दधि लेप किए।

चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन-तिलक दिए।।9

मणि-मंडित कनक-प्रांगण में कृष्ण अपने प्रतिबिम्ब को पकड़ने की चेष्टा करते हुए नंद-यशोदा का मन मोह लेते हैं-

किलकत कान्ह छुटुरुवनि आवत।

मनिमय कनक नंद के आंगन, बिंब पकरिबै धावत।

कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौ, कर सों पकटन चाहत।

www.ignited.in

किलकि हँसत राजत द्वै दंतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।10

माता यशोदा कृष्ण के कुछ बड़े होने पर हाथ पकड़कर उन्हें चलना सिखाती है। पाँव लड़खड़ाने से बालक कृष्ण गिर-गिर पड़ते हैं-

सिखवति चलन जसोदा मैया।

अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाइ धरनी धरे पैया।11

कुछ बड़ा होने पर बालक कृष्ण की चंचलता बढ़ जाती है। कृष्ण अपने प्रतिबिम्ब को देखकर नाचने लगते हैं। माता यशोदा छिपकर लाडले पुत्र की बाल-क्रीड़ा का नैसर्गिक आनंद उठा रही है। यथा-

हरि अपने आँगन कछु गावत।

तनक तनक चरननि सौ नाचत, मन ही मन ही रिझावत।

बाँह उठाई कजरी-धौरी गैयनि टेरि बुलावत।

कबहुँ चिते प्रतिबिम्ब खंभ में, लौनी लिए खवावत।

दुरि देखति जसुमति यह लीला, हरष आनंद बढ़ावत।।12

दूसरे बालकों को खेलते-कूदते देखकर बालक कृष्ण के मन में स्पर्धा की भावना जगती है। वे किसी बालक से कम नहीं रहना चाहते हैं। अतः वे माता यशोदा के पास जाकर उनके गले लिपटकर अत्यंत भोले स्वर में कहते हैं-

मैया मोहि बड़ौ करि लै री।

दूध-दही-धृत माखन-मेवा, जो मांगों सो दै री।।13

एक बार रात्रि में माता यशोदा कृष्ण का मन बहलाने के लिए चन्द्रमा दिखा देती है। बस बालक कृष्ण चन्द्र रूपी खिलौना लेने के लिए हठ कर बैठते हैं। बालक कृष्ण कहते हैं कि यदि चन्द्र खिलौना लाकर नहीं दोगी तो मैं धरती पर लोट जाऊँगा, तेरी गोदी में नहीं आऊँगा। मैं दूध नहीं पीऊँगा। तुम्हारा पुत्र न होकर बाबा नंद का पुत्र हो जाऊँगा। यथा-

मैया, मैं तो चंद-खिलौना लैहों।

जै हौ लोटि धरनी पर अबही, तेरी गोद न ऐहौं।

सुरभि कौ पथ पान न करिहौं, बेनी सिर न गुहैहों।

हैं हौं पूत नंद बाबा को, तेरो सुत न कहै हौ।।14

केसर की उबटन करके कृष्ण को स्नान कराना, उसकी चोटी को संवारना आदि क्रियाओं में मातृ-प्रेम की झलक मिलती है। यथा-

जसुमति जबहिं कह्यो, अन्हवावन, रोइ गए हरि लोटत री।

तेल उबटनो लै आगे धरि, लालहि चोहत-पोहत री।।15

एक दिन कृष्ण पूछ बैठते हैं कि मुझे तो दूध पीते कितने दिन बीत गए परंतु अभी भी मेरी चोटी नहीं बढ़ी, ऐसा क्यों? कृष्ण का यह भोलापन मातृ-हृदय में अपार वात्सल्य आनंद का संचार करता है। यथा-

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।

किती बार मोहि दूध पियत मई, यह अजहूँ है छोटी।

तू जो कहति बल की बेनी, ज्यों, ह्वै है, लांबी-मोटी।

काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै, नागिनि-सी भुइ लोटी।

सूरज चिर जीवौ दोउ भैया, हरि हलधर की जोटी।।16

ग्वालों द्वारा दूध दुहते समय दूध की धार का शब्द सुनकर कृष्ण को बड़ा आनंद आता है। वे दूध दूहने के लिए उत्सुक हैं-

मैं दुहिहौं मोहि दुहन सिखावहु।

कैसे गहत दोहिनी, छुटुवनि, कैसे बछरा थन लै लावहु।

कैसे लै नोई पग बाँधत, कैसे लै मैया अटकावहु।।17

कृष्ण की बात सुनकर नंद जी हँस पड़े। वे बच्चे का दिल नहीं तोड़ना चाहते थे। अतः उन्होंने कहा कि कल सुबह तुम्हें दूध दुहना सिखाऊँगा। दूसरे दिन सवेरा होते ही कृष्ण उछलते-कूदते माता यशोदा के पास जाकर कहते हैं-

तनन कनक की दोहिनी, दै दै री मैया।

तात दुहन सीखन कह्यौ, मोहि धोरी गैया।।18

थोड़ा बड़ा होने पर कृष्ण ग्वालों के साथ गायों को चराने के लिए जाने का आग्रह करते हैं, तो माता यशोदा स्वीकार कर लेती है और ग्वाल-बालों को कृष्ण को सावधानी से ले जाने के लिए कह देती है। जब वह सुनती है कि सभी ग्वाले पेड़ के नीचे बैठकर कृष्ण से गाय हंकवाते हैं तो उन्हें बहुत क्रोध आता है और कहती हैं-

मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ।

सूर स्याम मेरो अति बालक, मारत ताहिं रिंगाइ।।19

उक्त पंक्तियों में यशोदा के मन में ममता का अगाध-सागर हिलोरे मार रहा है। यह है वत्सल्य भान का चित्र।

यह तथ्य है कि प्रत्येक माँ अपने बच्चे का कल्याण चाहती है। बेटा बड़ा होकर भी माँ के लिए बच्चा ही रहता है। कृष्ण बलराम की शिकायत करते हुए कहते हैं-

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो।

मोसो कहत मोल कौ लीन्हों, तू जसुमति कब जायौ?20

तब माता यशोदा सौगंध खाकर विश्वास दिलाती है कि मैं ही तुम्हारी माता हूँ-

सूर स्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।।21

उक्त पंक्तियों में सहज वात्सल्य भाव झलकता है।

(2) वियोग वात्यल्य:

जिस प्रकार सूर ने वात्सल्य के संयोग-पक्ष का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है, उसी प्रकार वियोग पक्ष का भी उन्होंने बड़ा सजीव वर्णन किया है। माता यशोदा को यह स्वीकार्य नहीं कि वे कृष्ण के बिना ब्रज में रहे। इसलिए वे अपने मनोभावों को व्यक्त करती हुई नंद से कहती हैं-

नंद ब्रज लीजै ठोकि बजाइ।

देहु विदा मिलि जाहिं मधुपुरी जहँ गोकुल के राइ।22

कृष्ण के वियोग को माता यशोदा सहन नहीं कर पाती। वे नित्य कृष्ण के मथुरा से लौटने की प्रतीक्षा करती है। मक्खन को देखकर उन्हें कृष्ण का स्मरण हो आता है। उनके हृदय में हूक उठती है। उन्होंने मधुवन को अनेक संदेश भिजवाए। एक संदेश उनके हृदय की मर्मान्तक पीड़ा मुखर हो उठती है-

सूल होत नवनीत देखि मेरे मोहन के मुख जोग।23

यशोदा उपालंभ के स्वर में कहती है-

संदेशों देवकी सौं कहियौ।

हों तो धाइ तिहारे सुत की, दया करत ही रहियौ।24

ऐसा कहकर यशोदा ने देवकी के पास दूत के माध्यम से अपना संदेश भिजवाया है। इस संदेश में मातृ-हृदय का स्नेह-बाँध टूट पड़ा है। वे देवकी से यह कहलवाती हैं कि उनके बाल कृष्ण को गर्म रोटी तथा गर्म पानी माँगने की आदत है। उसी प्रकार कृष्ण को स्नान के लिए बार-बार मनवाने की आदत पड़ गई है। मुझे दिन-रात इस बात की चिंता लगी रहती है कि मेरा लाड़ला कृष्ण संकोचवश वहाँ अपनी इच्छाओं को पूरी कर पाता होगा अथवा नहीं-

जदपि टेव तुम जानतिं उनकी, तऊ मोहि कहि आवै।

प्रात होत मेरे लाल लडैते, माखन रोटी भावै।

तेल उबटनों अरु तातो जल, ताहि देखि भजि जाते।

जोइ जोइ मांगत सोइ देहि क्रम क्रम करि के न्हाते।

सूर पथिक सुनि मोहि रैनि-दिन, बढ़्यौ रहत उर सोच।

मेरो अलक लड़ैतो मोहन, ह्वै है करत संकोच।।25

माता यशोदा का यह संदेश वात्सल्य रस का अनुपम उदाहरण है। ममता और मातृत्व इस वियोग में वात्सल्य भाव चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया है। सूर ने यशोदा के मातृ हृदय की वात्सल्यमयी झाँकी उस समय भी बड़ी तन्मयता के साथ अंकित की है, जिस समय नंद अकेले ही मथुरा से लौटते हैं और माता यशोदा उन्हें द्वार पर अकेला खड़ा देखकर क्षोभ के मारे आकुल हो उठती है। माता यशोदा अपने प्रिय पुत्र के अभाव में एक सहज टीस, स्वाभाविक आकुलता एवं नैसर्गिक व्यथा से परिपूर्ण होकर अपने पति नंद को फटकार उठती है-

जसुदा कान्ह कान्ह कै बूझै।

फूटि न गई तुम्हारी चारों कैसे मारग सूझै।

छांडि सनेह चले मथुरा, कत दौरि न चीर गह्यौ।

फाटि न गई वज्र की छती, कत यह सूल सह्यौ।।26

माता यशोदा को पुरानी बातें बार-बार याद आती हैं और वह बार-बार यही अभिलाषा करती है कि वह दिन न जानै कब आएगा, जबकि मैं लोरियाँ गाती हुई दिन-रात अपने स्याम सलौने को छाती से लगाकर खिलाया करुँगी-

निसि बासर छतिया ले जाऊँ, बालक लीला गाऊँ।

www.ignited.in

वैसे भाग बहुरि कब ह्वै हैं, मोहन गोद खिलाऊँ।।27

इस प्रकार 'सूरसागर' का बाल वर्णन अपने पूर्ण वैशिष्ट्य के साथ बाल मनोविज्ञान और माता के सहज हृदय के अतुलनीय स्नेह को व्यक्त करने में पूर्ण सक्षम है। डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा के अनुसार, ''उनके काव्य में हम यह देखते हैं कि उन्होंने वात्सल्य भावों को कृष्ण-लीला के वर्णन में ऐसा चित्रित किया है। जैसा कभी कोई और कवि नहीं कर सका। वात्सल्य भावों को विस्तार और गहराई के साथ सूक्ष्मातिसूक्ष्म-चित्रण करने में काव्य-कुशलता की चरम सीमा प्रस्तुत कर दी है।''28

महाकवि सूरदास ने अपने बाल-वर्णन में बालकों की सहज प्रवृत्ति और माता के स्वाभाविक स्नेह का दिग्दर्शन कराया है। हिन्दी में केवल दो चार कवियों ने ही बालकों की स्वाभाविक सरलता, सुकुमारता और निष्पकपटता का वर्णन किया है। वात्सल्य के क्षेत्र में यदि सूर के सामने खड़े होने वाले कवि हैं तो केवल गोस्वामी तुलसीदास हैं परन्तु स्वाभाविकता, सरसता एवं सर्वांगीणता की दृष्टि से तुलसी भी पिछड़ जाते हैं। अतः वात्सल्य के क्षेत्र में सूर का कोई सानी नहीं है। विश्व के किसी भी भाषा के साहित्य में सूर के बाल-वर्णन-सा चित्रण पाना असंभव है। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि सूरदास वात्सल्य भाव के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इस दृष्टि से महाकवि सूरदास को यदि विश्व-कवि कहा जाए तो कोई अत्युक्ति न होगी।

संदर्भ सूची:

1. जगदीश गुप्त, हिन्दी साहित्य कोश (भाग-1), पृ. 769
2. बैजनाथ राय, सूर साहित्य संदर्भ, पृ. 191
3. रामचन्द्र शुक्ल, सूरदास, पृ. 107
4. हरगुलाल, सूरकाव्य: नया परिदृश्य, पृ. 46
5. सूरदास, सूरसागर, पृ. 661
6. सूरदास, सूरसागर, पृ. 694
7. सूरदास, सूरसागर, पृ. 716
8. वही, पृ. 709
9. वही, पृ. 717
10. वही, पृ. 728
11. वही, पृ. 733
12. वही, पृ. 795
13. वही, पृ. 794
14. वही, पृ. 811
15. वही, पृ. 804
16. वही, पृ. 793
17. वही, पृ. 1019
18. वही, पृ. 1027
19. वही, पृ. 1128
20. वही, पृ. 833
21. वही, पृ. 834
22. वही, पृ. 3786
23. वही, पृ. 3784
24. वही, पृ. 3743
25. वही, पृ. 3794
26. वही, पृ. 3795
27. वही, पृ. 3796
28. ब्रजेश्वर वर्मा, सूरदास, पृ. 58

Corresponding Author

Suman*

M.Phil (Hindi) NET, Hisar